E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(11): 15-17
Received: 15-09-2023
Accepted: 22-10-2023

Nitika
Student, Faculty of Arts, Delhi University, New Delhi, India

CorrespondingAuthor:
Nitika
Student, Faculty of Arts, Delhi University, New Delhi, India

संस्कृत साहित्य में राम का स्वरूप

Nitika

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i11a.1071

प्रस्तावना

''संस्कृतं नामदैवीवागन्याख्याता महर्षिभिः''[1]

संस्कृत साहित्य 'सम' पूर्वक 'कृ' धातु क्त प्रत्यय से संस्कृत शब्द की व्युत्पत्ति हुई है, जिसका मौलिक अर्थ है 'संस्कारित की गई भाषा, तथा साहित्य का अर्थ है सहितता। विश्व साहित्य में संस्कृत साहित्य का स्थान सर्वोपरि है। प्रायः परम्परागत रूप से संस्कृत अध्ययन–अध्यापन में पल्लवित विद्वान् आधुनिक विषयों में अपने को अपरिचित मानते हैं। जबकि सत्य तो यह है कि प्रत्येक विषय अथवा भाषा का आधार संस्कृत भाषा ही है अर्थात् संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी है संस्कृत साहित्य में संस्कृत का प्रयोग भाषा के रूप में वाल्मीकीय रामायण में सर्वप्रथम मिलता है।

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।[2]

संस्कृत साहित्य सर्वांगीण है यह पुरुषार्थ चतुष्टय से सम्पन्न अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से परिपूर्ण है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से हमे संस्कृत साहित्य में लिखे गये राजनीतिशास्त्र के सर्वांगीण विषयों का परिचय प्राप्त होता है। संस्कृत साहित्य रामायण, महाभारत, पुराण और समय–समय पर लोक कथा आदि को लेकर हमारे सामने प्रविष्ट होता है। संस्कृत साहित्य को हम निम्नलिखित भागों में विभक्त कर सकते हैः– वैदिक साहित्य, वेदांग साहित्य, पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, काव्यशास्त्र, नाटक, काव्यादि।
भारतीय साहित्य में राम से सम्बंधित विपुल साहित्य लिखा गया है संसार की विभिन्न भाषाओं में जो उच्च कोटि के महाकाव्य उपलब्ध हैं। उनमें महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण का स्थान सर्वोपरि है। रामायणीय रामकथा सहस्रों बर्षों से निरन्तर भारतीय जनमानस को प्रभावित करती आ रही है। संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य होने का गौरव भी इसे ही प्राप्त है रामचरित के वर्णन की जो दिव्यता और रमणीयता इस काव्य में पाई जाती है यह अन्यत्र दुर्लभ है। संस्कृत साहित्य में रामकथा को आधार बनाकर विपुल साहित्य की रचना हुई है, जिसमें काव्य, महाकाव्य, गीतिकाव्य, खण्डकाव्य, कथा, नाटक, चम्पु लिखे गये हैं वस्तुतः संस्कृत साहित्य में रामकथा का अपार भण्डार भरा हुआ है अतः संस्कृत साहित्य का विभागशः अनुशीलन करने के पश्चात् ही कोई भी सामान्य व्यक्ति उसके सम्पूर्ण क्लेवर से परिचित हो सकता है। पदकपं

रामकथा की परम्परा

रामकथा विश्व साहित्य की अमुल्य निधि है वैदिक युग से लेकर आज तक भारत बर्ष ही क्या, विश्व की प्रत्येक महत्वपूर्ण भाषा में रामकाव्य की रचना मिलती है आज रामकाव्य पर आश्रित काव्य जितना समृद्ध है उतना अन्य किसी विषय पर रचित साहित्य नहीं है। भारतीय वाङ्मय में रामकाव्य की सर्वाधिक रचना संस्कृत और हिन्दी भाषा में हुई है। रामकथा का मूल प्रमाणिक रूप राम के समकालीन कवि महर्षि वाल्मीकि रामायण में प्राप्त होता है वस्तुतः रामायण ही रामकथा की गंगोत्री है। जहां से रामकाव्य धारा का अमर अक्षय प्रवाह फूटता है और प्रवाहमान होकर भारत भूमि को उर्वर बनाता है। महर्षि वाल्मीकि की यह रचना रामायण समुद्र के समान नाना प्रकार के मणि एवं रत्नों से समृद्ध है इस महाकाव्य का सौन्दर्य जितना मनोहारी है उतना ही उत्कृष्ट कलात्मक भी है। संस्कृत साहित्य के अतीत काव्य कृतियों पर दृष्टिपात करने से यह बात अवश्य स्पष्ट हो जाती है कि रामकाव्य आदि काव्य के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है।

महर्षि वाल्मीकि अथवा महाकवि कालिदास से लेकर अद्यावधि विविध कवियों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्रादि को अपनी काव्य कृतियों का वर्ण्य–विषय बनाया है। वस्तुतः काव्यकार कवियों ने जनमानस के मस्तिष्क में श्रीराम को आदर्श एवं मर्यादावादी पुरुष के रूप में प्रकट किया है। भारतवर्ष में रामायण को आधार बनाकर हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य के अनेक शीर्षस्थ कवियों ने अपनी रचनाओं को अलंकृत किया है और वह समस्त कवि राम के प्रति अपनी भक्ति भावना से सदैव समर्पित रहे हैं यही कारण है कि इन महाकवियों को भक्त की संज्ञा दी गयी है। सर्वप्रथम महार्षि वाल्मीकि ने अपनी समपूर्ण श्रद्धा के साथ राम के व्यक्तित्व को आधार बनाकर रामायण की रचना की, जिसमें उन्होंने राम के महान व्यक्तित्व में समस्त गुणों को समाविष्ट किया यथा–

समुद्र इव गाम्भीर्य धैर्येण हिमालय इव विष्णुना सदृशो वीर्य
सोमवत् प्रियदर्शिनः
कालाग्नि सदृशः कोधे क्षमया पृथिवी समः।[3]

वाल्मीकि रामायण के पश्चात् महाभारत में भी रामकथा का विकास हुआ है महाभारत में रामकथा विविध रूपों में दिखाई गई है। मुख्य रूप से महाभारत में अनेक बार रामकथा का वर्णन किया गया है।

1. 'स्वर्गारोहण पर्व में रामकथा का वर्णन इस प्रकार किया है– वेदे रामायणे पुण्ये भारते भारताभिः। आदौ चान्ते च मध्ये च हरि सर्वत्र गीयते।।[4]
2. आरण्यक पर्व– भीम व हनुमान् संवाद में भीम कहते हैं कि हनुमान् रामायण में अति विख्यात है–

'भ्राता मम गुणश्लाघ्यो बुद्धिसत्ववलान्वितः।
रामायणेऽतिविख्यातः शूरो वानरपुंगवः।।[5]

इसमें हनुमान् ने वनवास से लेकर अयोध्या लौटने तक की कथा का वर्णन 11 श्लोकों में किया है। इस प्रकार महाभारत मे रामकथा का वर्णन यत्र तत्र देखने को मिलता है। वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत के पश्चात् संस्कृत साहित्य में रामकथा का वर्णन मिलता है। संस्कृत साहित्य में रामकथा का अपार भण्डार है। संस्कृत में पुराण साहित्य, काव्यसाहित्य, नाट्यसाहित्य इन तीनों रूपों में रामकाव्य परम्परा के दर्शन होते हैं। यथा हरिवंशपुराण में रामकथा का संक्षिप्त परिचय मिलता है। इस पुराण में राम के अवतार रूप का उल्लेख हुआ है। इसमें राम के वनागम से लेकर रावणवध तक की कथा का वर्णन है। इसमें मुख्य रूप से दो एसे प्रसंग है जिनका कथा में उल्लेख नहीं हुआ है। प्रथम दशरथ द्वारा पुत्रैष्टि यज्ञ तथा द्वितीय अयोनिजा सीता का वर्णन। इस प्रकार भागवत पुराण, कूर्मपुराण, वाराहपुराण स्कन्दादि महापुराणों में रामकथा का वर्णन किया है। इसी कम में साम्प्रदायिक रामायणों में भी रामकाव्यों का उल्लेख आया है यथा अध्यात्म रामायण में राम की बाललीला, केवट वृतान्त, मथुरा प्रकरण, राम वनगमन, सीता हरण, रामेश्वर में शिवलिंग की स्थापना रावण की नाभि में अमृत का उल्लेख, तथा वैकुण्ड जाने की इच्छा से रावण द्वारा सीता हरण आदि का वर्णन वर्णित है। 7 इसी तरह अद्भुतरामायण आनंदरामायण, तत्त्वसंग्रहरामायणय रामब्रह्मानदंकृतद्धमहारामायण, अगस्त्यरामायण, भुशुण्डीरामायणादि में रामकथा का वर्णन मिलता है।

संस्कृत ललित साहित्य में रामकथा

इसके अन्तर्गत महाकाव्य नाटक कथा साहित्य आदि आते हैं।

रघुवशं महाकाव्यः कालिदास द्वारा रचित रघुवंश में राम कथा का वर्णन 9 वें सर्ग में किया गया है यह कथा वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। किंतु इसमे कुछ परिवर्तन अवश्य किए गये हैं।

रामचतिमहाकाव्यः इस महाकाव्य के रचयिता अभिनंद है 36 सर्गों के इस महाकाव्य में किष्किन्धाकाण्ड से आरम्भ करके युद्ध काण्ड तक के कथानक का वर्णन वाल्मीकि रामायण के आधार पर किया गया है।

जानकीहरणः यह कुमारदास की रचना है इसकी कथावस्तु वाल्मीकि रामायण के प्रथम 6 काण्डों पर निर्भर है इसमे 20 सर्ग है रामजन्म से लेकर ताडका, सुबाहु बध, रामलक्ष्मणादि का जनकपुर में आगमन तथा सीता विवाह आदि का वर्णन है।

रामायणमंजरीः क्षेमेन्द्र द्वारा रचित इस महाकाव्य की रचना सन 1030 ई0 मे की थी। इसमे क्षेमेन्द्र ने अपनी काव्यप्रतिभा के द्वारा 5386 श्लोकों में कथावस्तु का उल्लेख किया है तथा इसमे किसी भी प्रकार की मौलिकता का प्रदर्शन नही है।

दशावतारचरितम्ः यह क्षेमेन्द्र द्वारा रचित ग्यारहवीं शताब्दी की रचना है इसमें रामावतार की कथा का वर्णन है। अतः इसी प्रकार भट्टिकाव्य, राघवोल्लास, जानकीपरिणय, सेतूवन्ध इत्यादि रामचरिताश्रित महाकाव्यों में रामकथा का वर्णन मिलता है।

संस्कृत साहित्य में नाट्य साहित्यः नाट्यसाहित्य के अन्तर्गत ऐसे अनेक नाटक मिलते हैं जिनमे रामचरित का वर्ण्य विषय मिलता है यथाः–

प्रतिमानाटकः भास द्वारा रचित छठी शताब्दी के इस नाटक मे राम के अभिषेक से लेकर राम को भरत के द्वारा राज्य सौंपने तक की कथा वर्णित है वस्तुतः इस नाटक में भास ने अपनी काव्य प्रतिभा को दर्शाने के लिए कुछ परिवर्तन कियें है।

अभिषेकनाटकः इस नाटक में भास ने किष्किंधाकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक के कथा का वर्णन किया है सीता को अग्निपरीक्षा के प्रसंग में लक्ष्मी रुप मे देखा गया है।

महावीरचरितम् : रामकथा का वर्णन करने वाले नाटकों मे यह प्रमुख नाटक सात अंको मे वर्णित है जिसमे राम–सीता विवाह से लेकर रामराज्याभिषेक की कथा चित्रित है।

उत्तररामचरितम् : महाकवि भवभूति का करूण रस प्रधान यह नाटक सात अंको में विभक्त है रामायण के अन्तिम काण्ड अर्थात् उत्तरकाण्ड की कथावस्तु का वर्णन है उसमें मुख्य सातवें अंक में लवकुशादि के द्वारा वाल्मीकि कृत नाटक का रंगमंच किया गया है

अनर्घराघव : यह रचना मुरारि द्वारा राचित है इस नाटक में अयोध्या में विश्वामित्र का आने से लेकर राज्याभिषेक तक का कथानक है।

बालरामायण : यह बालरामायण नामक नाटक का सबसे अधिक विस्तृत नाटक है इसके रचयिता राजशेखर है इसमे सीता विवाह से लेकर राज्याभिषेक पर्यन्त कथा का वर्णन है। इस प्रकार उपर्युक्त नाटको के अतिरिक्त अनंगहर्ष रचित उदारराघव, दिङनाग रचित कुन्दमाला, शक्तिभद्र रचित आचार्यचूड़ामणि, जयदेव रचित

प्रसन्नराघव, दामोदरमिश्र रचित हनुमन्नाटक आदि अनेक नाटक जिनमे रामकथा का विशद् वर्णन मिलता है।

संस्कृत साहित्य में राम का स्वरूप

वाल्मीकि रामायण के आधार पर

'वाल्मीकीय रामायण' के प्रणेता महर्षि वाल्मीकि को 'आदिकवि' माना जाता है। और इसीलिए यह महाकाव्य 'आदिकाव्य' माना गया है। इसमें श्रीराम के चरित्र का उत्तम एवं वृहद् विवरण काव्य रूप में स्थापित हुआ है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित होने के कारण इसे 'वाल्मीकीय रामायण' कहा जाता है। वर्तमान में राम के चरित्र पर आधारित जितने भी ग्रन्थ उपलब्ध हैं उन सभी का मूल महर्षि वाल्मीकि कृत 'वाल्मीकीय रामायण' ही है।

वाल्मीकीय रामायण की कथावस्तु राम के चारों ओर अपना ताना–बाना बुनती है। राम इस महाकाव्य के नायक हैं और महर्षि वाल्मीकि ने उनके चरित्र को एक अतिमानव के रूप में चित्रित किया है।

ईश्वरीय विशिष्टता और असाधारण गुणों के स्वामी होते हुये भी राम अपने किसी भी क्रिया–कलाप से मानवेतर प्रतीत नहीं होते, उनका चरित्र पुरषोत्तम के रूप में ही किया गया है। शत्रुओं का संहार, सागर पर सेतु निर्माण, लक्ष्मण की मूर्द्धा दूर करना आदि कार्य सम्पूर्ण महाकाव्य में राम मनुष्यों की भाँति दूसरों के सहयोग से ही सम्पन्न करते हैं।

वाल्मीकीय रामायण में राम 'पितृभक्ति', 'भ्रातृप्रेम', 'पातिव्रत्य धर्म', 'आज्ञापालन', 'प्रतिज्ञापूर्ति' तथा 'सत्यपरायणता' की शिक्षा देते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, अयोध्या के सूर्यवंशी ६ रंघुवंशी नरेश दशरथ और रानी कौशल्या के सबसे बड़े पुत्र थे।

राम की पत्नी का नाम सीता था इनके तीन भाई थे– लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। हनुमान, राम के, सबसे बड़े भक्त माने जाते हैं। राम ने लंका के राजा रावण (जिसने अधर्म का पथ अपना लिया था) का वध किया। राम की प्रतिष्ठा मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में है। राम ने मर्यादा के पालन के लिए राज्य, मित्र, माता–पिता, यहाँ तक कि पत्नी का भी साथ छोड़ा। इनका परिवार आदर्श भारतीय परिवार का प्रतिनिधित्व करता है।

राम न्यायप्रिय थे। उन्होंने बहुत अच्छा शासन किया इसलिए लोग आज भी अच्छे शासन को रामराज्य की उपमा देते हैं उनके लंका विजयोपरांत मातृभूमि पर व्यक्त विचार महानतम राष्ट्रप्रेम की शिक्षा देते हैं श्रीराम का वचन था–

अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

लक्ष्मण! यद्यपि यह लंका सोने की बनी है, फिर भी इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है। (क्योंकि) जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं।

भास के प्रतिमानाटक के आधार पर

श्रीराम प्रतिमानाटक के नायक हैं। धीरोदात्त नायक के गुणों से युक्त हैं। राज्य प्राप्त न होना साथ ही वनगमन की आज्ञा को सुनकर उसका पालन करना ही उनके धीरोदात्त नायक का परिचायक है। कैकेयी के प्रति राम की भक्ति भावना है। वनवास को जाते हुये राम की उक्ति है कि ''यदि पुत्र अपने पिता की आज्ञा का पालन करता है तो इसमें क्या आश्चर्य है''।

प्रस्तुत नाटक में भरत के प्रति वात्सल्यपूर्ण शब्दों का प्रयोग कर राज्यभार देख–रेख के लिये सौगन्ध देना। बास ने राम को पितृभक्त, मातृभक्त और भ्रातृभक्त दिखलाया है। रावण द्वारा भी राम की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की गयी है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है संस्कृत साहित्य और रामकाव्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है, परन्तु रामकाव्य का प्रमुख आधार ग्रंथ महर्षि वाल्मीकि विरचित रामायण महाकाव्य है। रामायण के अनन्तर यदि रामकथापरक सामग्री का पूर्ण आंकलन किया जाए तो गोस्वामी तुलसीदास विरचित रामचरितमानस ही दृष्टिपथ में आता है वस्तुतः रामकाव्य का वणर्न विषय इतना विशद् है कि उसका वर्णन कर पाना बहुत ही कठिन कार्य है फिर भी इस पत्र के द्वारा रामकाव्य को सूत्रपात रूप में वर्णित करना एक विनम्र प्रयास है।

पाद टिप्पणीयां

1. काव्यादर्श 1.33
2. वाल्मीकि रामायण 5.5–14
3. वाल्मीकि रामायण 3.5.25
4. महाभारत 6.8.11
5. महाभारत 147.11
6. हरिवंशपुराण अ.1,41 श्लोक
7. अध्यात्म रामायण अ.1 से 7
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ.223

सन्दर्भ

1. अध्यात्म रामायण, लेखक–प्रभात शास्त्री, वसुमति प्रकाशन, प्र. 1984.
2. वाल्मीकि रामायण, महर्षि वाल्मीकि, चौखम्भा विद्याभवन, प्र. 1977.
3. काव्यादर्श, महाकवि दण्डी, ओरिन्टल इंस्टीच्युट, प्र.1938
4. महाभारत, रामनारायण दत्त शास्त्री, गीता प्रेस, स. 2058
5. हरिवंशपुराण, गीता प्रेस गोरखपुर प्र. 1998
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय